

---

## Shivakinkaraprokta Shivalingasparshamahima

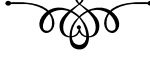
---

शिवकिङ्कराप्रोक्ता शिवलिङ्क<sup>3</sup>स्पर्शमहिमा

---

### Document Information

---



---

Text title : Shivakinkaraprokta Shivalingasparshamahima

File name : shivakinkarAproktAshivalingasparshamahimA.itx

Category : shiva, shivarahasya

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 26 kumbhaghoNamahimAnuv  
| vAvRittashlokAH||

Latest update : June 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 16, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Shivakinkaraprokta Shivalingasparshamahima

---

शिवकिङ्कराप्रोक्ता शिवलिङ्क<sup>3</sup>स्पर्शमहिमा

---



(शिवरहस्यान्तर्क<sup>3</sup>ते उक्<sup>3</sup>राक्<sup>2</sup>ये)

शिवकिङ्करा ऋषः

ये समर्चितकेल<sup>3</sup>ीशास्ते यान्ति शिवसन्निधि<sup>4</sup>म् ।  
येऽनु<sup>4</sup>यर्चितकेल<sup>3</sup>ीशा निरये तान्निपातय ॥ 303 ॥

अतस्तनुक्शये स्पर्नु<sup>3</sup>ष्टम् शिवलिङ्क<sup>3</sup>म् त्र<sup>3</sup>विजोत्तमैः ।  
तैरीशुर्नु<sup>3</sup>पया लप<sup>4</sup>यम् का<sup>3</sup>णपत्यम् न समस्यः ॥ 304 ॥

कर्तव्यः शिवलिङ्क<sup>3</sup>स्य स्पर्शः प्रान्णत्ययक्शणे ।  
तेन नस्यन्ति पापानि का<sup>3</sup>णपत्यम् स लप<sup>4</sup>यते ॥ 307 ॥

शिवलिङ्क<sup>3</sup>म् शिवकारम् यः स्पर्नु<sup>3</sup>शे<sup>3</sup>न्वहम् मुता<sup>3</sup> ।  
तस्य सत<sup>3</sup>यः प्रणस्यन्ति मन्नापातककोदयः ॥ 308 ॥

तु<sup>3</sup>र्लप<sup>4</sup> शिवलिङ्क<sup>3</sup>स्य स्पर्शो मुक्तीप्रता<sup>3</sup>यकः ।  
शिवलिङ्का<sup>3</sup>पि<sup>4</sup>समस्पर्शो पू<sup>4</sup>रिपुण्यतपःप<sup>2</sup>लम् ॥ 309 ॥

शिवलिङ्क<sup>3</sup>स्य माहात्म्यम् तत्स्पर्शस्योपि वस्तुतः ।  
शङ्करो वेत्<sup>3</sup> सवज्जुस्तत<sup>3</sup>न्यो न कता<sup>3</sup>स्र ॥ 310 ॥

शिवलिङ्क<sup>3</sup>म् शिवकारम् सर्ववेत्ता<sup>3</sup>न्तसमस्तुतम् ।  
तथैव परमम् पू<sup>3</sup>ज्यम् प्र<sup>3</sup>राह्मणत्<sup>3</sup>यैर्मुमुक्षुपि<sup>4</sup> ॥ 311 ॥

ज्जुनामोक्शप्रत<sup>3</sup>म् त्रि<sup>3</sup>व्यम् शिवलिङ्क<sup>3</sup>म् शिवार्तमकम् । 312.1

॥ इति शिवरहस्यान्तर्क<sup>3</sup>ते शिवकिङ्कराप्रोक्ता शिवलिङ्क<sup>3</sup>स्पर्शमहिमा  
सम्पूर्ण ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । उक्<sup>3</sup>राक्<sup>2</sup>यः सप्तमाम्शः । अत्<sup>4</sup>यायः 26 कम्प<sup>4</sup>को<sup>4</sup>णमहिमानुवर्णन  
। वाव्नु<sup>3</sup>त्तसुलोकाः ॥


- .. shrIshivarahasyam . ugrAkhyah saptamAMshaH . adhyAyaH 26 kumbhaghoNamahimAnuvarNa  
. vAvRRittashlokaH..


Notes:

Śivakīṅkarāḥ शुरुवलुङुकुरल: speak about the merits of Śivaliṅga Sparśa शुरुवलुङुकु<sup>3</sup>सुडडरुशु.

Proofread by Ruma Dewan

---

——  
*Shivakīṅkaraprokta Shivaliṅgasparśamahima*  
pdf was typeset on June 16, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

